IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

रामायण की दूसरी शबरी:स्वयंप्रभा

. डा, वी. आई . शेख
सह प्राध्यापक
किटेल कला महाविद्यालय, धारवाड़, कर्नाटक

उद्भ्रांत जी द्वारा रचित सस्वयंप्रभा खंडकाव्य का रचनाकाल अप्रैल 1990 है अमन प्रकाशन से ये प्रकाशित है उद्भ्रांत जी का पूरा नाम रमाकांत शर्मा है द्यस्वयंप्रभा मेरुसावरणि की पत्नी ऋषि शांडिल्य की बेटी थी ऋक्षाबिल नामक गिरी दुर्ग के निकट अपने पिता शांडिल्य के आश्रम में रहती थी स्वयंप्रभा को हेमा सखी से यह आश्रम,गुफाद्धमिला था वह स्वर्ग अमरावती चली गईं तब से स्वयंप्रभा रामदूतों का इंतजार करती हुई ध्यान में लीन हो गई स्वयंप्रभा खंडकाव्य में निम्नलिखित 9 सर्ग हैं मरूए मायाए मुमुक्षु मार्ग एमही एमारुतिए मांए महोदधिए महाकाश उद्भ्रांत जी ने सभी सर्गों के नाम श्मश अक्षर से ही रखा है ये उनकी विशेषता है । स्वयंप्रभा की गुफा को श्महदूवनश कहा है वह तपस्विनी रामभक्तिनएनीति निपुणएयोगिनीए संन्यासिनी क्षमाशील थीद्य

1 पहला सर्ग मरू अर्थात मरूभूमि . तुलसीदासजी की चौपाई से शुरू होता है कवि कहते हैं संघर्ष के बिना कुछ हासिल नहीं होता जो स्वयं मुक्तिदायिनीए जगन्माता होने पर भी सीतामाता को लाने के लिए हनुमानए वानर सेनाए राम आदि को भी कितना संघर्ष करना पड़ा था। सब वानर सेना नदी नाले सरोवर तालाब पर्वत जंगल पार कर गुफाओं में जगंल में सीता माता को खोजते हुए दक्षिण दिशा की ओर वनों को पार करते हुए सिंह एचीता एभेड़ियेए शूकर,वराहद्ध जंगली भैंसे एहाथीए विकराल अजगर आदि भयानक जानवरों से बचते बचाते घने जंगल से जा रहे हैं सभी का मन राम के कार्य में लीन है अपने शरीर तक का भान उन्हें नहीं है। जो फल फूल बूटियां मिल रही हैं उन्हें खा रहे हैं । वानर सेना के सामने अचानक रेगिस्तान का संकट या कर्म निष्ठा की परख के रूप में सूखा कंटिला प्रदेश आ गया थाए जहां पर ना तो कोई पेड़ था और ना ही पानी या तालाबए सिवाय प्रखर सूर्य और एक अंतहीन सन्नाटाए ऐसे मरुस्थल में वानर समूह सीता की खोज में पहुंचता है । वानरसेना में अंगद एनील.नल द्वविदए मैंद ए शरभ ए सुषेण महायोद्धा ऋक्षराज, भालू द्धजांबवंत और प्राणदायक हनुमान थे हनुमान राम से राममुद्रिका की अंगूठी को सीता को दिखाने ले आए हैं । यहां पानी ए बूटियों को खोजने आए थे वानर सेना को प्यास लगी है इसीलिए ऋषि आश्रम के पास वानर सेना आई है वह फल फूल पत्तों से हीन सूखे कांटों से युक्त जंगल था जहां सूर्य आग बरसा रहा था और दूर.दूर तक मैदान ही मैदान था

2 दूसरा सर्ग माया एहै ,कंडु ऋषि की कथाः प्रसंगद्ध वह सूखा जंगल कभी भागीरथी नदीए पेड़ पौधेएजल एनालों से भरा था पक्षियां एतितलियां उडती थीं स्वर्ग जैसी सुंदरता थी हरदम मुनी एसंत एमहात्माओं की तपस्या चलती थी यहीं कंडु ऋषि का दिव्य आश्रम था ये तेजस्वीए तपस्वीए मनस्वी एसाधकए सत्यवादीए वेदों के जानकारए विद्वान सहिष्णु एज्ञानी थे कोई भी इनका अनादार नहीं करता था इनकाए प्यारा सुंदर चंचल 10 साल का एक बेटा था हमेशा वेदों का ज्ञान हासिल करते हुए आश्रम के मुनि जनों की सेवा करता था छोटा होने के बावजूद इसकी बुद्धि बडों की सी थी श्लोक उसे कंठस्थ थे सभी उसे आशीर्वाद देते थे सबका प्रिय था। यह सब कंडु ऋषि देखकर पुत्र वात्सल्य से भर जाते। कंडु ऋषि का आश्रम ऐसा दिव्यए शांत निस्तब्धए मनोहारीए मंत्रोच्चारण से युक्त था। लेकिन समय बितते आश्रम की सुंदरता एवातावरण देखकर असुर वहां खींचे चले आए वहां बुरे कर्म करने लगे अपने अलग रूप धारण कर स्वेच्छाचार वामाचार करने लगे पेड़ पौधों को नष्ट करने लगे जल को गंदा करने लगे ए फल फूल उखाड देतेए आश्रम में मल मूत्र फेंक देते रात्रि में मदिरापान करते चिल्लातेए जोर जोर से हंसते कोई ऋषि मुनि सामने आ जाते तो उनकी दाढ़ी केश. जटा पकडकर फेंक देते पेड़ पौधे उखाड़ देते प्रकृति का संतुलन बिगाड़ रहे थे संतुलन के लिए पेड़ आवश्यक हैं कवि के परिसर प्रेम को हम यहां देख सकते हैं इन सब कारण से आश्रम का सब वातावरण प्रदूषित होने लगा कवि के अनुसार स्वस्थ जीवन के लिए प्रदूषण को रोकना आवश्यक है असुरी दुष्टाचरण इनके बढ़ते जा रहे थे मदिरापान मांस भक्षण बढ़ने लगा राक्षस नगर वधुओ के साथ अश्लीलता में डूब गए द्यूत क्रिडा ,जुआद्ध होने लगी स्वर्ग से सुंदर आश्रम को राक्षसों ने नरक से बद्तर कर दिया । इस स्थिति को कुंडू ऋषि का छोटा सा बेटा सह न सका

वह छोटा था लेकिन निर्भिक था सेवा परायण था ए तपस्वी तेजस्वी था एधार्मिक ग्रंथों का अध्ययन कर चुका था राक्षसों से निहत्था संघर्ष करते हुए वह आश्रम की साफ सफाई में जुड़ गया गंदगी साफ करताए कूड़ा कचरा निकालता ;जैसे आज कल स्वच्छ भारत अभियान चल रहा है द्ध बीमार ऋषि मुनियों की देखभाल करने लगा प्रदूषित वातावरण को स्वच्छ करने लगा वहां का माहौल ऑक्सीजन रहित प्रदूषित रोगाणुओं से युक्त हो गया था ;जैसे कोरोना के संदर्भ में साफ सफाई और रोगियों की सेवा करने वाले ही बीमार हो जाते द्ध साफ सफाई रोगियों की सेवा करते करते कंडु ऋषि का बेटा गंभीर रूप से बीमार हो गया मुनि जनों ने उसका बहुत उपचार किया मगर सफल नहीं हो सके बीमारी के कारण कंडु ऋषि के बेटे की मृत्यु हो जाती है। कंडु ऋषि उस समय गंभीर तपस्या कर रहे थेए उन्हें अंधेरे का आभास हुआ। अब असुरों का उत्पाद और भी बढ़ने लगा उन्हें रोकने वाला अब कोई नहीं था मुनियों ने हिम्मत कर तपस्या रत कंडु ऋषि के पास जाकर बेटे की मृत्यु का समाचार सुनाया यह समाचार सुनकर कंडु ऋषि बहुत दुखी हुए ब्रह्मर्षि होकर भी अपने बेटे को बचा न सकेए भयंकर क्रोध में आ गए उन्हें लगा हरियाली फल फूल जलवायु की सुंदरता के कारण ही असुर इस ओर खींचे चले आए अब यह प्रदूषित भी होगया अगर यह परिसर सुंदर नहीं होता तो राक्षस भी नहीं आते बेटे की मृत्यु भी नहीं होती बालक की मृत्यु का कारण ये सुंदर परिसर ही बना समझकर परिसर पर क्रोधित होकर बिना सोचे समझे इस तरह शाप दे देते हैं ष्नष्ट हो जाए समूचे क्षेत्र की हरीतिमा वृक्ष जाएं सूख धरती बांझ होवे लुफ्त हो जाए निमिष में यहां जलचरए वनचर।ष उनकी बुद्धि बेटे के मोह एवं क्रोध से विचलित हो गई थी एयह नहीं सोचा वे क्या शाप दे रहे हैं एशाप दे दिया तुरंत पानी सूख गया पेड़ पौधे सूख गए नदी बेकार हो गई धरती बंजर बन गई सब ऋषि मुनि वहां से चले गए अंत में कंडु ऋषि भी उस प्रदेश को छोड़कर चले गए । यहीं अब वानर सेना आई थी यही कंडु ऋषि की अंतर्रकथा एवं प्रसंग है।

वानर सेना को लगा यह मायावी जंगल है ऐसा दृष्य उन्होंने नहीं देखा था स्वयंप्रभा के कवि उद्भ्रांत जी यहां अपनी कल्पना शक्ति का सहारा लेते हैं कि वह क्षेत्र किस वजह से मरुस्थल बना होगा कवि कंडु ऋषि की अंतर्रकथा का उल्लेख करते हैं जो कथा ऊपर दी गई है असुरों के आगमन से स्वेच्छाचार वामाचार मदिरापान तो बड़ा ही बड़ा होगा और राक्षस पेड़ पौधे को उखाड़ देने से वहां जलए वायु एध्वनि प्रदूषण भी होने लगा । पर्यावरण प्रदूषण से वहां का स्थान त्याज्य हुआ है कवि की जीवन सोच पुरानी कथा और आधुनिकता के मध्य में संघर्ष करती है उद्भ्रांत जी ने भविष्य की पीढीयों के लिए परिसर संरक्षण में अपना उत्तरदायित्व निभाते हैं ।

3 तीसरा स्वर्ग मुमुक्षु है इसका अर्थ है मोक्ष की कामना करने वाला । इस सर्ग में स्वयंप्रभा की कहानी शुरू होती है भूख प्यास के कारण सब वानर सेना व्याकुल हो गई किंतु पानी न मिलने के कारण घने जंगल में सब भुला गए एहनुमान जी अपने तपोबल से अविचलित थे । हनुमान को संदेह हुआ कि जल पिए बिना सब लोग मरना चाहते हैं तो भूखा प्यासा वानरों का दल पानी भोजन की तलाश मे कंडु ऋषि द्वारा अभिषप्त जंगल से गुजर रहा था। सभी भूखे प्यासे थे बस हनुमान जी अपने तपोबल से अविचलित थे इसी दौरान दक्षिण दिशा से एक भयानक राक्षस प्रकट हुआ इन सब को निंगलना चाहता था और कहता है सुनो मानव समूहों मैं तुम्हारा काल बनकर आ गया हूं याद कर लो इष्ट अपने और हो जाओ सभी तैयार बनने भोज्य मेरा मैं आज तुम सबको बना ऊंगा क्षुदा की पूर्ति का साधन यह सुनकर सब वानर कांपने लगे तभी हनुमान उसे अपनी पूंछ से बांध लिया और एक घूंसा लगाया राक्षस खून की उल्टीयां करते हुए भाग निकला हनुमान राक्षस को मारकर इन सब की रक्षा करता है इस तरह असुरी साम्राज्य का अंत होने लगा सभी बेचैन प्यासे थके हुए थे आगे नहीं बढ़ सकते थे अगर सीता को नहीं ढूंढे तो राजा पसुग्रीव दंड देंगे यहां भूखे प्यासे मरेंगे एसब गिरने लगे हनुमान अपने साथियों की यह दशा स्थिति देख नहीं पाए अपने तपोबल से आंख मूंद कर देखा एक तपस्वी नारी स्वयंप्रभा; स्वयं प्रकाशितद्ध दिख रही है वहां पर सुंदर माहौल है फल फूल नीर निर्झर पेड़ पौधे हैंए ऊंचे पेड़ पर चढ़कर चारों ओर वे देखने लगे।

4 वां सर्ग मार्ग है हनुमान जी पेड़ पर चढ़कर चारों ओर देखने लगे हनुमान को विश्वास था जो उन्होंने सुंदर परिसर ध्यान में देखा था यहीं कहीं है फिर दूर देखा एक गुफा के मुंह पर बड़ी शिला है वहां कुछ होगा वानरों को यह शुभ समाचार दिया और कहा मुझे विश्वास है हमारी भूख प्यास वहां मिट जाएगी सभी गुफा की ओर निकल पड़े गुफा के पास आकर गुफा की शिला हटाने की कोशिश की लेकिन असफल रहे हनुमान ने शिला पर एक जोर की मुट्ठी मारी कंधे से लगाकर शीला को दूर कर दिया जिससे भारी आवाज हुई गुफा से चकवा पक्षी हंस बगुलेए जलपक्षी उड़ने लगे कमल केसर फूलों की गंध चारों ओर फैली थी। तब हनुमान युवराज अंगद से कहते हैं श्सुनो हे वत्स देखो प्रकृति की लीला निराली य यह समूचा प्रांत बंजरता लिए है जो उसी के मध्य में यह गुफा स्थित है अजब; स्वयंप्रभा की गुफा थीद्ध सभी हनुमान जी की बात पर विश्वास कर कि अंदर जल मिलेगा अंधेरी गुफा में प्रवेश करते हैं

5 पांचवा सर्ग मही है अर्थात धरती ए गुफा के रास्ते में अंधेरा था अंदर उजाला था। गुफा की ओर चकवे बगुले आदि रहने के कारण वानर वहां जाते हैं किष्किंधा कांड में स्वयंप्रभा का प्रसंग आता है गुफा के अंदर फल फूल अमृत समान शीतल जल हरियाली मिलती है हनुमान गुफा के अंदर सब के साथ जाते हैं सब वानर एक दूसरे के सहारे अंधेरी गुफा में जाने लगे

कंदमूल पानीआदि देखकर सब चकित होते हैं और बिना अनुमति के अंदर जाते हैं क्योंकी वे भूखे प्यासे थे अंदर पक्षियों की आवाजए फूल की गंध आने लगीए गर्मी कम हो गई थी शीतल हवा बह रही थी ए वानर खुश होने लगे जल्दी.जल्दी अंदर जाने लगे थोड़ी देर बाद उनके सामने सुगंधित फूल फल झरने जलाशय आदि दिखाई देने लगे वानरी सेना का चेहरा खिल उठा वे खुश हुए फिर उनको लगा कि यह राक्षसों की माया तो नहीं है ताकि हम सब को मार सके जांबवंत भी पानीए फल न छूने के लिए कहते हैं ता कि इसके मालिक को पूछकर हम सेवन करें इसलिए सब उस सुंदर गुफा के मालिक को अंदर ढूंढने लगे चिड़िया चहचहा रही थीं भंवरे मंडरा रहे थे । शीतल हवा बह रही थी।

6 छटा सर्ग का नाम मारुति है जो हनुमान जी का एक नाम है गुफा में रास्ते में बाहर अंधेरा था अंदर प्रकाश था उस गुफा में सुंदर रत्न जड़ित भवन भी थे सब राम नाम लेकर आगे बढ़े वहां सोने से युक्त एरत्न जड़ित चंदन की लकड़ी से बना सुंदर आश्रम दिखाई देता है। प्रेरणा और विश्वास का आधार स्वयंप्रभा मनोहर मूर्ति है वहां एक तेजस्विनीए तपस्विनीए साध्वी ए वलकलधारी ,पेड़ की छाल का कपड़ा द्धजटाधारीए सफेद बालों वाली ए प्रकाशमान ध्यान मग्न तपस्या में लीन तपस्वी नारी स्वयंप्रभा दिखाई देती है वृद्ध थी लेकिन चेहरा कांति से चमक रहा था जैसे सूर्य हो। हनुमान आगे बढ़ते हैं गौरव के साथ प्रणाम करते हैं फिर कहते हैं देवी ले स्वीकार अभिवादन हमारा बिना आज्ञा आश्रम में आपके हम सभी वानर आगए हैं आप मां है हमें क्षमा करें इस मृदुए गंभीर वाणी को सुनकर साधना मग्न स्वयंप्रभा आंखें खोलती है वह सब जानते हुए भी गंभीर होकर पूछती है कौन हो तुम यहां क्यों आए होः बिना मेरे आज्ञा के यहां कोई नहीं आ सकता बताओ वरना सब को भस्म कर दूंगी सब वानर डर के मारे कांपने लगेए मगर हनुमान साहस के साथ विनम्रता से कहते हैं हमने गलती की है क्षमा दें हम विवश थे भूखे प्यासे थेए फिर स्वयंप्रभा मंद मुस्कुराकर कहती है आप सब देखने से तेजस्वी एमनस्वी लगते हैं लेकिन भूखे प्यासे थके हुए हैं इसलिए आपकी विवशता बाद में सुनूंगी पहले स्नान कर लेंए जलपान कर लें मीठे फल खाकर यहां का शुद्ध मधुर शीतल अमृत जैसा जल पीलें अपनी भूख मिटालेंए एमां स्वयंप्रभा की आज्ञा पाकर सभी वानर उपवन दर्शन के लिए जाती है और सब कंदमूल फल खाने लगे जल स्रोत से प्यास बुझाने लगे अब उनमें उमंग तरंग उत्साह आ गया था फिर सब तपस्विनी स्वयंप्रभा के सामने आ गएद्य

7 वां सर्ग मां है यहां स्वयंप्रभा से मिलकर हनुमानजी अपने साथियों की स्थिति राम कहानी सुनाते हैं राम काज के लिए आए हैं उनकी प्यास केवल भौतिक ना होकर आध्यात्मिक बन गई है स्वयं प्रभा सहर्ष उनका स्वागत करती है वह आदर आतित्य करके गुफा आश्रम की कथा सुनाती है वानर सेना को एक विशिष्ट अनुभूति प्रदान करके मदद करती है और कहती है आगे एक महान व्यक्ति मिलेंगे ,जटायु का भाई संपाती द्ध जिन से सीता का पता तुम्हें मिलेगा इस सर्ग को कवि ने मारुती को ही समर्पित किया है उनके व्यक्तिगत गुणों के साथ आध्यात्मिक पराकाष्ठा को भी मुखरित किया है गुफा के उपवन में तालाब में कमल खिले हैं सुंदर मंदिर है जिसमें तपो मूर्ति स्त्री बैठी है । मां स्वयंप्रभा हनुमान से . जो नम्र हैं एसुंदर है चेहरे से विद्वत्ता झलकती है जो वानरों में विशिष्ट है ए इन सबके साथ ऐसी स्थिति में यहां प्रतिबंधित पवित्र आश्रम में पहुंचने का कारण पूछती है हनुमान परम विनयी बनकर कहते हैं श्हम यहां बिना आज्ञा आ गए हैं अब जो दंड देंगे हमें मंजूर है फिर भी आप से अनुरोध करेंगे कि माता सीता की खोज में आप मदद कीजिए तो हमारा जीवन सार्थक हो जाएगा। स्वयं प्रभा पूछती है जानकी की खोजए हनुमान कहते हैं मांतु हां! मां जानकी की खोज में यह वानरी समुदाय निकला है पूरी रामकथा सुनाते हैं एदशरथ एउनके चार पुत्रए सीता स्वयंवरए सिहासनए कैकेई का दशरथ से वरदान मांगनाए भरत का अभिषेकए राम को 14 वर्ष का वनवास की कथा वनवास में सीता का हरण सुग्रीव से मिलनाए बाली की हत्याए सीता माता को ढूंढते बंजर भूमि से होते हुए यहां तक पहुंचने की सारी कथा बताते हैं।

स्वयंप्रभा शांत भाव से राम कथा सुनती है कहती है ए हे पवनसुत आप ज्ञानी हैं मैं अपने तपोबल से यह सब जान गई थी और भविष्य में क्या होगा येभी मैं जानती हूं आप रूद्र के अवतार हैं वह सब जानती थी लेकिन आपके मुंह से यह सब सुनना चाहती थी मैं धन्य हो गयी कहकरए अपनी कथा सुनाती है कि वह शांडिल्य ऋषि की बेटी और मेरुसावरणी की पत्नी है । बचपन से श्री विष्णु की परम भक्त थी। इसने भविष्य में भगवान विष्णु से मुलाकात का स्वप्न देखा। विष्णु इसकी भक्ति से खुश होकर इसे श्स्वयंप्रभा श्जो स्वयं अपनी प्रकाश से प्रकाशित होती हैश्र कहा इसी नाम से सुविख्यात होगी और राम के अवतार में मुझसे,विष्णु अवतार .राम द्ध मुलाकात होगी आगे तुम ही सीता की खोज में सहायक बनोगी आदि बताया था। सखी हेमा के पिता विश्वकर्मा की भक्ति से प्रसन्न होकर मय के द्वारा ये गुफाए सुंदर भवन महाशिव की आज्ञा पर निर्मित है। हेमा ने स्वयंप्रभा को यहां लाया था यहां पर भी दानव उत्पात मचा रहे थे देवेंद्र ने उन सब को नाश किया। हेमा जब स्वर्ग अमरावती जाती है तो स्वयंप्रभा यहां गुफा में रह गई और तपस्या में लीन होकर रामदूतों की प्रतीक्षा कर रही थी। फिर कहती है रामदूतों को कोई प्रतिबंध नहीं ए कोई कहीं भी आ जा सकते हैं इसीलिए आप प्रवेश कर गए वरना बिना हमारी,हेमाए स्वयंप्रभाद्ध आज्ञा के यहां कोई नहीं आ सकता मैं यह सब पहले ही जानती थी तुम सब का इंतजार कर रही थी इसके लिए कितने युग मैंने बिताए श्री विष्णु ने इसके बारे में मुझे सपने में पहले ही बताया था । सीता माता दशानन रावण की कैद में है और उसे पटरानी बनाना चाहता है और कष्ट दे रहा है सीता श्री राम को याद करते हुए कष्ट सहन कर रही है । गंगा सी पवित्र हैं और उनके क्रोध की

ज्वाला में रावण का सर्वनाश हो जाएगाए हनुमान मुख्य भूमिका तुम्हारी होगी सभी वानर मंत्रमुग्ध हो गए हनुमान उन्हें उनके आतिथ्य के लिए धन्यवाद देते हैं और यहां से हम कहां जाएं कैसे निकले कैसे ढूंढे सीता माता कोए आप सहायता कीजिए कहने पर इस दुर्गम स्थान से किसी का निकलना आसान नहीं है लेकिन तुम सब रामसेवक हो जानकी को ढूंढने निकले हो तुम्हारी मदद मैं अवश्य करूंगी और अपने योग बल से सबको वहां ले जाऊंगी जहां से तुम्हें जानकी का सही पता मिलेगा उसके बाद किष्किंधा नगरी में प्रभु राम के दर्शन करुंगी ।सबको आंख मूंदने केलिए कहती है द्य

8 आठवां सर्ग महोदधि है अर्थात विशाल सागर सेना आंखे मूंदकर बाहर समुद्र को देखती है स्वयंप्रभा की साधना शक्ति से वानर सेना महोदधि तक पर पहुंचती है महोदधि का न ओर है न छोर ऐसी अवस्था में सेना प्राण त्यागने को भी तैयार है एवानर सेना तुम्हारा कल्याण हो आशीर्वाद देती ।

थोड़ी देर बाद आंख खोलने पर सब वानर विशाल समुद्र के पास थे स्वयंप्रभा अदृश्य ; गायबद्ध हो गई थी ज्योति रूप में किशकिंदा नगर जा रही थी वानर सेना सोचने लगी विशाल समुद्र के पास सीता माता का पता कैसे चलेगा वापस लौटेंगे तो सुग्रीव द्वारा प्राण दंड निश्चित था फिर स्वयंप्रभा की बात याद आ गई कि यहां से सीता माता का ठीक पता मिलेगा पर कैसे वह नहीं जानते थे यही सोचने लगे कि यहां आगे कहां जाएं द्य

9 महाकाश अंतिम नवम सर्ग है इसका अर्थ है महान या विशाल आकाश। स्वयंप्रभा राम के पैरों को वंदना करके बद्रिकाश्रम को चली जाती है आगे वानरों को ग्रास करने रास्ते में बड़ा गीध प्रकट होता है वानर सेना उसे अपनी व्यथा ए राम कहानी सुनाती है और सीता की रक्षा के लिए जटायु ने प्राण दिए हैं हम भी सीता की खोज के लिए अपने प्राण देंगे कहते हैं एगीधराज जटायु का नाम सुनकर पूरी कथा जानकर कहते हैं जटायु उसका छोटा भाई है और ये जटायु का बड़ा भाई है इसका नाम संपाती है वानर सेना कहती है सीता माता का पता नहीं लगाएंगे तो राम जी के सामने कैसे जाएंगे हम अपने प्राण त्याग देंगे हमारा काम अधूरा रह जाएगा। संपाती पहले ऊंचाई में सूर्य तक उड़ने के कारण सूर्य के ताप से उसके पंख जल गए थे जिस कारण से अब वह उड़ नहीं पाता था लेकिन उसका आकार बड़ा था रावण द्वारा सीता हरण के दृश्य को उसने भी देखा था लेकिन उम्र होने के कारण और पंख जलने के कारण वह कुछ नहीं कर सका ए रावण द्वारा सीता हरण का आंखों देखा हाल वह वानर सेना एवं हनुमान जी को सुनाता है अपनी गरदन ऊंची करके समुद्र के उस पार दक्षिण की ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखकर यह कहता है कि सागर के बीच में रावण की राजधानी लंका नगरी प्रदेश है वहां अशोक वन में पेड़ के नीचे सीता माता है । अचानक उस समय स्वयंप्रभा की छवि आकाश में उभरकर आशीष देते हुए अंतर्धान हो जाती है उसका प्रकाश आज्ञाचक्र का प्रतिनिधित्व करता है। आंख खोलने पर समुद्र के विशाल लहरों को देखकर वानर सेना घबराने लगी उसी किनारे के गुफा से बड़ा भयानक गीध निकला जो बूढ़ा था लेकिन विशाल था जिसके पंख कटे थे वह भूखा था भगवान नेे मेरी भूख मिटाने के लिए तुम्हें भेजा है सोचकर उन सबको खाने के लिए आगे बढ़ता है वानर सेना कहती है हम खुद मरना चाहते हैं क्योंकि हम सीता माता का पता लगा नहीं सके और जटायु जैसी वीर मृत्यु भी हमारे नसीब नहीं जटायु की मृत्यु की बात सुनकर गीध चौंकता है और बताता है सच सच बताओ मैं जटायु का बड़ा भाई संपाती हूं फिर अपने युवा दिनों की बात बताता है सूर्य तक हम उडते थे मैं अभिमान से ऊपर तक उड़ता गया और सूर्य के ताप से मेरे पंख जल गए पंख कटा पक्षी बनकर सागर के तट पर मैं गिर गया वह दशानन ध्रावण था जो सुंदर स्त्री का अपहरण कर जा रहा थाए स्त्री राम का नाम ले रही थी मैं विकलांग था वरना उसे जाने ना देता नारी की रक्षा के लिए स्वतंत्रता के लिए भाइ जटायु ने प्राण दिए तुम धन्य हो जटायु कह कर उसका गुणगान करता है और दक्षिण दिशा की ओर अपना शीश घुमाकर तीक्ष्ण दृष्टि से देखकर कहता है शत योजनाओं के पार बीच बसी स्वर्ण निर्मित लंका नगरी दशानन की राजधानी है वहां अशोक वन में एक ऊंचे पेड़ के नीचे राम का नाम लेकर सीता आंसू बहा रही है।

वहां जाना कठिन कार्य है प्रभु राम का नाम लेकर आप जा सकते हैं मेरा आशीर्वाद भी तुम्हारे साथ है कहते हुए वह आकाश में उड़ने लगा सीता माता का पता बताकर स्वयंप्रभा के तपोबल से उसके पंख फिर उगने लगे गीध उड़ता हुआ महाकाश में अदृश्य हो गया । वानर सेना को सीता माता का पता मिल गया था इस कारण निस्तब्दए हर्षित और चकित थे स्वयंप्रभा को स्मरण किया तभी आकाश में स्वयंप्रभा की छवि उभरने लगी हाथ उठाकर सबको आशीर्वाद दे रही थी कहती है . मुझे खुशी है सीता माता की खोज में मैं सहायक बनी अब मैंने प्रभु श्री राम के दर्शन भी किष्किंधा नगरी में कर लिया अब परमधाम ;स्वर्ग. मोक्षद्ध जा रही हूं कोई इच्छा बाकी नहीं है मेरा जीवन सार्थक हो गया तुम्हीं में से कोई एक जाकर सीता का हाल.चाल पूछ कर आएगा ये मेरा आशीर्वाद है कहते हुए वह महाकाश में विलीन हो गई सब उसे हृदय से विदाई देते हैं अब एक नया सूर्योदय होने लगा जिसके प्रकाश में सीता माता का पता लगा स्वयंप्रभा मोक्ष पा गई सब के जीवन में अंधकार को चीरकर स्वयंप्रभा का प्रकाश फैलने लगा।

निष्कर्षत रूकह सकते हैं स्वयंप्रभा पौराणिक पात्र एवं संदर्भ होने पर भी आधुनिक जनजीवन से जुड़ा हुआ है क्योंकि कवि ने इसमें पर्यावरण सुरक्षाए प्रदूषणए स्वच्छताए नारी स्वतंत्रता की बिंदुओं पर ;जटायु द्वारा सीता की स्वतंत्रता के लिए प्राण देना द्ध चर्चा की है जो आधुनिक युग में भी ज्वलंत समस्याएं हैं ।स्वच्छ भारत अभियान चल रहा है एनारी मुक्तिए नारी शक्ति नारी स्वतंत्र ए जैसे नारे गूंज रहे हैं कवि चाहते हैं ए पाठक गण इसे सकारात्मक रूप से ग्रहण करें। परिसरए नारी की रक्षा करें और स्वच्छता बरकरार रखें जिससे स्वास्थ्य बढेगा देश श्स्वयंप्रभाश बनकर उन्नति की ओर जाएगा ।